www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुष्प्रवृत्तियाँ–
पतन और पराभव का कारण

श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुष्प्रवृत्तियाँ—पतन और पराभव का कारण

जहाँ मित्रों की संख्या एवम् घनिष्टता बढ़ाना आवश्यक है, वहाँ यह भी उपयुक्त है, कि शत्रुओं को पहचानें, उनसे दूर रहें और अवसर मिले, तो उनसे जूझने का भी प्रयत्न करें। राम और कृष्ण तक को अपने महान प्रयोजनों की पूर्ति के लिए साथी-सहयोगी ढूँढ़ने पड़े थे और शत्रुओं के साथ आरम्भ से लेकर अन्त तक जूझना पड़ा था। फिर सामान्य जनों का तो कहना ही क्या, उन्हें भी यह प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। शत्रुओं की दुष्टता प्रतिभावानों के करे-धरे पर भी पानी फेर देती है, जबकि मित्र समुदाय डूबते को तिनके जैसी भूमिका सम्पन्न करता है।

हम शत्रु वर्ग से चारों ओर से घिरे रहते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि मित्रों का सर्वथा अभाव है, पर इतना अवश्य है, कि शत्रु अनायास ही चढ़ दौड़ते हैं, अकारण बिना बुलाये ही आ धमकते हैं, जबकि मित्र बनाने और बुलाने के लिए प्रयत्नपूर्वक आग्रह करना पड़ता है।

सिर में जुएँ, खाट में खटमल, कोठे में चूहे, हवा में विषाणु, पानी में जीवाणु बने ही रहते हैं और जब भी उनका दाँव लगता है, तभी आक्रमण करके त्रास देते हैं, कभी-कभी तो उनमें से कोई प्राणघातक संकट तक खड़ा कर देते हैं। मित्र तो सौभाग्यवश ही मिलते हैं। कृष्ण को पाँच पाण्डव और राम को सुग्रीव, हनुमान, नल, नील, जामवन्त जैसे पाँच मिले थे। शत्रुओं की तो इन लोगों को भी कमी नहीं। बचपन से ही दैत्य आक्रमण करते रहे हैं। राम को लंका के असुरों से, कृष्ण को कौरव निरस्त करने के लिए अनेकों ताने-बाने बुनने पड़े, फिर सर्वसाधारण को ऐसी आपत्तियाँ न सहनी पड़े, ऐसा हो नहीं सकता। यदि उनकी ओर से उपेक्षा बरती जाय, तो वे सर्वनाश ही कर दें। सर्प-बिच्छू जंगलों में नहीं रहते, घरों में भी आ घुसते हैं और सतर्कता न बरती जाय, तो जान के ग्राहक बनते हैं।

शत्रुओं में कुछ बाहर के होते हैं। उन्हें देखा पहिचाना जा रहा है। उनसे नित्य ही आमना-सामना नहीं होता, फिर उनके कारण भी हानि हो सकती है। उसका ध्यान रहता है और प्रतिकार की जैसी भी तैयारी होती है, करते हैं। अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हितैषी भी सुराग लगाये रहते हैं और वक्त-मौके पर उनसे होने वाली हानि का प्रतिकार भी करते हैं, किन्तु कुछ शत्रु ऐसे होते हैं, जो अपने ही भीतर किसी गुफा में छिपकर ऐसे बैठते हैं, कि उनकी आशंका तो क्या कल्पना भी नहीं होती। उनके आक्रमण का सिलसिला भी निरन्तर चलता रहता है। शहतीर में लगा हुआ घुन अपना काम करता रहता है और उसे खोखला बना कर कुछ ही दिनों में धराशायी कर देता है। विषाणुओं की भी यही बात है। क्षय जैसे रोगों के कीटाणु इतने छोटे होते हैं, कि खुली आँख से दीख भी नहीं पड़ते, पर जहाँ साँस के साथ फेफड़ों में जा घुसते हैं, तो ऐसी अदृश्य हरकतें करते रहते हैं, जिनसे प्राण जाने की विभीषिका आ खड़ी होती है।

ऐसे ही शत्रुओं में मनोविकार हैं, जो स्वभाव में सम्मिलित हो जाते हैं। वे अपने को विदित भी नहीं होते और खटकते भी नहीं। इतना ही नहीं जब कोई उन्हें सुझाता है, तो निन्दा-अपमान समझकर हम बुरा भी मानते हैं। इसलिए मित्र-हितैषी भी उनकी चर्चा नहीं करते। अकारण कोई बुराई क्यों बाँधे। जब हमें ही अपने चिन्तन और स्वभाव में घुसे हुए विकार सूझते नहीं, तो दूसरा कोई क्यों ढूँढ़ता फिरे। दूसरा कोई हटा भी नहीं सकता। कार्य करना ही हो, तो मात्र अपने को ही करना पड़ता है। इस कार्य में कोई मित्र सम्बन्धी, कुटुम्बी भी कुछ कर नहीं सकते। अधिक से अधिक इन शत्रुओं की ओर इशारा कर सकता है और न छोड़ने पर मुसीबत उठाने की चेतावनी दे सकता है। इनसे पीछा छुड़ाना तो अपने ही हाथ की बात है।

आलस्य, प्रमाद, चिन्ता, उद्विग्नता, भय, संदेह, अविश्वास जैसे दुर्गुण ऐसे हैं, जो आदत में सम्मिलित हो जाने पर शत्रुओं द्वारा पहुँचाई जाने वाली हानि से कम नहीं, वरन् अधिक ही पहुँचाते हैं। नशेबाजी इसी वर्ग में आती है। क्रोध, आवेश, आतुरता, शान, सज-धज, शेखीखोरी आदि को भी ऐसे ही शत्रु गिना जाना चाहिए। यह अपनी प्रतिष्ठा गिराते हैं अप्रामाणिक ठहराते हैं, अविश्वास और ओछा, बचकाना सिद्ध करते हैं। ऐसी मान्यता यदि बनने लगे, तो घृणा पनपती है, भर्त्सना होती है और मित्रों की संख्या दिन-दिन घटती जाती है, बुद्धिमान उपेक्षा करते हैं, किन्तु जिन्हें बहुत सहनशीलता का सद्गुण नहीं मिला है, वे प्रत्यक्ष निन्दा पर उतर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आते है और बात बढ़ने पर लड़ने-झगड़ने तक तैयार हो जाते हैं। इतना तो निश्चय है, कि दुर्गुणी, मनोविकारग्रस्त लोगों के साथ कोई घनिष्ठता नहीं बनाता, कारण कि यह छूत की बीमारी उनको भी लग सकती है, यह बदनाम ही नहीं करती, वरन् पतन-पराभव के गर्त में भी धकेल सकती है।

आलस्य एक प्रकार की अपंगता है। लकवा मार जाने पर जैसे हाथ-पैर असमर्थ हो जाते हैं, हर काम के लिए दूसरों पर आश्रित रहते हैं, लगभग वैसी ही स्थिति आलसी की होती है। लोहा बेकार पड़ा रहे, तो उसे जंग खा जाती है और वह किसी काम का नहीं रहता। आलसी के सम्बन्ध में भी यही बात समझनी चाहिए, वह अपने लिए, दूसरों के लिए कोई महत्वपूर्ण काम नहीं कर सकता, यहाँ तक कि परावलम्बी की तरह दिन गुजारता है।

प्रमादी को अधपगला कहना चाहिए, जो दिमाग का गंभीरतापूर्वक प्रयोग नहीं करते, जिम्मेदारी लिए हुए कामों पर ध्यान नहीं देते, आधा-अधूरा करके छोड़ देते हैं। जो करते हैं, वह दिलचस्पी के अभाव में फूहड़ों जैसा होता है। विद्वान और प्रवीण भी यदि प्रमादी हो, तो अशिक्षितों–अनगढ़ों जैसा कुछ अस्तव्यस्त ही कर रहा होगा। आलस्य शारीरिक अपंगता है और प्रमाद मानसिक अनगढ़पन। इसके रहते कोई व्यक्ति न नियमित-अनुशासित रह सकता है और न तन्मयता के अभाव में किसी सफलता का श्रेय पा सकता है।

अपनी सामान्य हैसियत को असामान्य दिखाने वाले पाखण्डी सज-धज, शृंगार, ठाट-बाट बनाते और लोगों की दृष्टि अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ऐसे लोगों का बचकानापन किसी से छिपता नहीं, उन्हें मनचला, ओछा और ढोंगी-छली माना जाता है। पैसा, समय, श्रम अपना खर्च करते हैं, किन्तु दूसरों की आँख में अपनी इज्जत बढ़ाने का प्रयोजन तनिक भी पूरा नहीं कर पाते, उल्टे उपहासास्पद ही बनते हैं।

आतुरता, जल्दबाजी भी ऐसा ही कुटेव है, जो मन में उठे या किसी के सुझाये हुए काम पर गंभीरतापूर्वक विचार नहीं करने देती। जो उमंग उठी, उसे छोटे बच्चों की तरह तत्काल करने लगना—यहाँ तक न देखना कि उपयुक्त परिस्थिति और साधन-सामग्री है या नहीं। ऐसे लोग किसी के भी बहकावे में आ सकते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। अपनी उमंग या दूसरों के बहकावे को भी तत्काल कार्यान्वित करने के लिए उतारू हो जाते हैं। आगे-पीछे सोचने की, कठिनाइयों की कल्पना करने तक की जिनमें धीरज नहीं होती, उन्हें बालबुद्धि और उपहासास्पद ही बनना पड़ता है।

क्रोध, आवेश, उत्तेजना एक प्रकार का मानसिक ज्वर है, जिसमें आदमी संजीदगी और समझदारी गँवा बैठता है, सन्निपातग्रस्त की तरह कुछ भी उल्टा-सीधा बकता है। जो बात अपने को पसंद न आयी, उसी पर आगबबूला हो जाना, सामने वाले को दुर्भावग्रस्त मान बैठना और जो भी जी में आवे, भूत-प्रेत के आवेश-ग्रस्तों की तरह कहने या करने लगना, क्रोधी के लिए स्वभाव बन जाता है। उन्हें झगड़ालू माना जाता है और दोष अन्यों का रहने पर भी यही सोचा जाता है, कि क्रोधी—आवेशग्रस्त होकर बकझक कर रहा है। ऐसे लोग सही बात पर भी दूसरों का समर्थन अथवा सहानुभूति अर्जित नहीं कर सकते।

क्रोध का छोटा रूप है, तुनकमिजाजी। जरा-जरा सी बात पर रूठ जाना, बोलना बन्द कर देना, मुँह बिगाड़ लेना, यह ओछेपन की आदत है। संजीदा आदमी भी सामने वाले की गलतियाँ, गलतफहमियों को भी धैर्यपूर्वक सुनते हैं और जब उपयुक्त अवसर देखते हैं, तब वस्तुस्थिति समझा देते हैं। ऐसे लोग धीर, वीर, गंभीर माने जाते हैं। ऐसे ही लोगों को भारी-भरकम, संजीदा कहते हैं।

भविष्य में मुसीबत आने, बने काम बिगड़ जाने, असफलता मिलने, बाधाएँ खड़ी होने की कई लोग चिन्तायें करने लगते हैं और हर घड़ी उद्विग्न रहते हैं, भारी काम सिर पर आते ही घबरा जाते हैं और उसे सफल बनाने का मार्ग सोचने, संभावित कठिनाइयों का समाधान सोचने की अपेक्षा हक्का-बक्का हो जाते हैं। ऐसे लोग प्रतिकूलताओं की कल्पना करते और तिल को ताड़ बनाते रहते हैं। उद्विग्न मस्तिष्क इस स्थिति में नहीं रहता, कि सही बात सोच सके और सही मार्ग खोज सके। चिन्तित मस्तिष्क, उल्टी और बेतुकी बातें सोचने में इतना भ्रमित हो जाता है, कि जो सामान्य कार्य सामान्य रीति से हो रहे थे, वे भी उलट-पुलट हो जाते हैं। जिस कारण से चिन्ता थी, उसे संभाल लेना तो दूर उद्विग्न व्यक्ति नई कठिनाइयाँ गढ़ लेता है और उन कठिनाइयों को न्यौत बुलाता है, जिनका चिन्ता के विषय से कोई सीधा संबंध नहीं था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भय भी ऐसी मुसीबत है, जो मनुष्य को "लो ब्लड प्रेसर" वाले व्यक्ति की तरह हड़बड़ा देती और अशान्त कर देती है। रस्सी को साँप और झाड़ी को भूत मान बैठने वाले व्यक्ति तनिक सी बात को पहाड़ जैसी मुसीबत मान बैठते हैं। हाथ-पैर काँपने, दिल धड़कने और सिर चटकने लगता है। भय, कायरता की परिणति है। जिनमें साहस का, अभाव होता है, वे छोटे कारण को बड़ा मानकर अथवा कुछ भी कारण न होने पर कुकल्पनाएँ गढ़ कर अपने आप को संकटग्रस्त मान बैठते हैं। छोटी–सी असफलता मिलने पर इतने निराश हो जाते हैं, मानों अब भविष्य में कोई सफलता मिलेगी ही नहीं। कमजोर तबियत के लोगों को ग्रहदशा उल्टी बता कर ज्योतिषी लोग भी हिम्मत तोड़ देते हैं और वे हर घड़ी विपत्ति आने की संभावना सोच कर निराशाग्रस्त रहते हैं। ऐसे लोगों की रहा-सही शक्ति एवम् हिम्मत भी विदा हो जाती है।

इसी मनोरोग से मिलता-जुलता संदेह का, अविश्वास का, रोग है। इससे ग्रस्त आदमी अपनों पर, परायों पर लांछन लगाते रहते हैं। कितने ही पुरुष अपनी स्त्रियों को चरित्रहीन होने का कोई प्रमाण न होने पर भी संदेह करते रहते हैं। कइयों पर ऐसा भय छाया रहता है, कि किसी ने जादू-टोना किया, षड्यंत्र बनाकर कान भरे हैं और अफसरों, मित्रों, ग्राहकों को प्रतिकूल कर दिया है। जबकि इन आशंकाओं में प्रायः तनिक भी सचाई नहीं होती। बच्चे के बीमार होते ही किसी की नजर लगने, भूत-पलीत का आक्रमण होने जैसी मनगढ़न्त कल्पनाएँ करते रहते हैं।

वस्तु स्थिति समझने के लिए विवेकवान और दोनों पक्षों की संभावनाओं पर विचार करने की क्षमता होनी चाहिए। जिन्हें एकांगी चिन्तन करना ही आता हैं, वे भले को बुरा और बुरे को भला, मान बैठते हैं। वह आग्रह ऐसा होता है, कि जो किसी के समझाने पर समझता भी नहीं। जिस प्रकार दुराग्रही आवेशग्रस्त अपनी जिद पर अड़े रहते हैं, वैसे ही डरपोक आशंकाग्रस्त से भी कुकल्पनाएँ छोड़ते नहीं बनती।

उदास और निराश व्यक्ति को ऐसा समझना चाहिए जैसा बिना तेल का दीपक। मनुष्य उत्साह और साहस के बल पर जीवित रहता, विजयी बनता और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आगे बढ़ता है। जिसके अंतराल में उमंगें नहीं उठतीं, जो नीरस और निस्तब्ध रहता है, जिसे न वर्तमान सुहाता है और न भविष्य की आशा है, वह जिंदगी को भारभूत बनाये टूटे छकड़े की तरह किसी प्रकार ढोता रहता है। जिसका अन्तराल बुझा-बुझा–सा रहता है, उसके लिए प्रकाश की किरणें किसी भी दशा में नहीं उठती। अँधेरे में भटकने वाले ऐसे व्यक्ति न उपयोगी सिद्ध होते हैं और न किसी को सहारा दे पाते हैं।

उत्तेजना या अपवाद दोनों ही मानसिक दोष-दुर्गुण हैं। मनुष्य को धीर, वीर और गंभीर होना चाहिए। संतुलन किसी भी स्थिति में डगमगाने नहीं देना चाहिए, न सफलता में आपे से बाहर होना चाहिए, न असफलता में हिम्मत हार बैठना चाहिए। प्रयत्नरत् मनुष्य आज नहीं तो कल विजय प्राप्त करेगा। जिसकी हिम्मत नहीं टूटी, उसे कोई हरा नहीं सकता। जिसके हौसले बुलन्द हैं, वह नदी की धार चीरते हुए उल्टी दिशा में चलने वाली मछली की तरह हर मोर्चे पर कमाल दिखाता है, कोई अवरोध उसका रास्ता रोक नहीं सकता।

मनोविकारों में उपरोक्त असंतुलन तो जीवन को भारभूत बनाते ही हैं? इसके अतिरिक्त दुर्व्यसन और पाप-पातकों की अपनी बिरादरी है, जो मनुष्य को अच्छी-खासी परिस्थितियों को बिगाड़ती और बर्बाद करके रख देती है। नशेबाजी, मटरगश्ती, आवारागर्दी, सिनेमाबाजी, जुआ, सट्टा, लाटरी आदि का चस्का किसी अच्छे खासे को भिखारी बना कर छोड़ता है। सातवें आसमान के सामने सपने देखने वाला, जब बहुत ऊँचे से नीचे गिरता है, तो करारी चोट लगती है। यही नहीं महत्वांकाक्षाओं की दृष्टि से शेख-चिल्ली के समतुल्य बनता है। कठोर श्रमशील और तत्पर श्रमशीलता के सहारे ही कोई ऊँचा उठता है। अनेक बार मोर्चे पर लड़ने और अड़ने वाले ही विजय श्री का वरण करते हैं। जो मात्र सपने देखना जानते हैं और मुफ्त में ही सम्पन्न हो जाने का दिवास्वप्न देखते हैं, उन्हें पश्चात्ताप ही हाथ लगता है।

कुकर्मी इन सब सनकियों से बुरे हैं। वे तात्कालिक लाभ की दृष्टि से अनीति अपनाते और उस पाप के भार से दब मरते हैं। चोरी, बेईमानी, ठगी के सहारे जो लक्ष्मी समेटना चाहते हैं, वे बदनामी, भर्त्सना और प्रताड़ना ही सहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तत्काल जो इस प्रकार कमाया था, वह गाँठ की कमाई भी रुलाते हुए साथ लेकर विदा होता है। लम्पट व्यभिचारी क्षणिक स्वाद के लिए अपनों को, साथी को, खोखला बनाते और सर्वनाश के गर्त में धकेलते हैं। प्रत्यक्ष व्यभिचार का तो कहना ही क्या? मानसिक कामुकता की कुकल्पनाएँ जिनपर छाई रहती हैं, उनका मस्तिष्क किन्हीं महत्वपूर्ण विचारणाओं को अपनाने योग्य नहीं रहता। एकाग्रता तो वे निभा ही नहीं पाते और प्रगतिशील मनुष्यों की पंक्ति में तो खड़े हो ही नहीं पाते।

दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता अपने अहंकार की पूर्ति के लिए दुर्बलों को सताते और डकैती, कत्ल जैसे बीभत्स कर्म करते रहते हैं। अपहरण, बलात्कार जैसी उद्दण्डताएँ भी ऐसे ही पिशाचकर्मी करते रहते हैं। दूसरों का गला काटते-काटते बहुधा अपना भी गला काट बैठते हैं। ऐसों को नर-पिशाच ही कहना चाहिए। नर-पशु वे हैं, जिनने सामर्थ्य गवाँ दी। नर-पिशाच वे हैं, जो अपराधी, क्रूरकर्मी की ही योजनाएँ बनाते और जब भी घात लगती है, ऐसे बीभत्स कर्म कर गुजरते हैं। ऐसे लोग प्रायः यह भूल जाते हैं, कि इस सृष्टि का कोई नियन्ता भी है और उसकी न्याय-व्यवस्था में देर भले ही लगे, पर अंधेर की गुंजाइश तनिक भी नहीं है। भले-बुरे कर्म शब्दवेधी बाण की तरह निशाने तक पहुँचने के उपरान्त लौट कर उसी तरकस में आ जमते हैं, जहाँ से उन्हें छोड़ा गया था।

चिन्तन से चरित्र, चरित्र से व्यवहार बनता है। चिन्तन को दूषित कर लेना भी प्रकारान्तर से कुकर्म की पृष्ठभूमि विनिर्मित करना है। मनः स्थिति ही भली-बुरी परिस्थितियाँ बनाती हैं और उन्हीं के कारण मनुष्य को सुख-दुख से भरे-पूरे प्रतिफल मिलते हैं। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। इस सिद्धान्त को शत-प्रतिशत खरा उतरते देखा गया है। करने वाले को भोगना पड़ा है। जो खाई खोदता है, बबूल बोता है, उसे अपने किये का दुष्परिणाम निश्चित रूप से भुगतना पड़ता है। गुण, कर्म, स्वभाव—यह तीनों ही कर्म की श्रेणी में गिने जाते हैं। यह अच्छे स्तर के हों, तो मित्र हैं और इसमें अवांछनीयता घुस पड़े, तो यही शत्रु बन जाते हैं। भीतर घुसे हुए यह शत्रु इतनी हानि पहुँचाते हैं, जितनी सौ बलिष्ठ शत्रु भी मिल कर नहीं पहुँचा पाते।

क्रमाङ्क/२४३। युगान्तर चेतना प्रेस, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार। मूल्य—४० पैसा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org